Online at: https://researchtrendsjournal.com
Indexed Journal

ISSN No: 2584-282X
Peer Reviewed Journal

INTERNATIONAL JOURNAL OF TRENDS IN EMERGING RESEARCH AND DEVELOPMENT

Volume 4; Issue 1; 2026; Page No. 86-87

Received: 08-10-2025
Accepted: 15-11-2025
Published: 16-01-2026

"माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियो के मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन"

[1]डॉ. तिर्मल सिंह एवं [2]दीपक कुमार गौतम

[1]शोध निर्देशक प्रोफेसर, शिक्षण प्रशिक्षण विभाग, श्री जय नारायण पी. जी. कॉलेज, लखनऊ, उत्तर प्रदेश, भारत
[2]शोधकर्ता, शिक्षण प्रशिक्षण विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय लखनऊ, उत्तर प्रदेश, भारत

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.18659764

Corresponding Author: डॉ. निर्मल सिंह

सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन करना है। प्रस्तुत अध्ययन हेतु न्यायदर्श के रूप में उत्तर प्रदेश के मऊ जनपद के माध्यमिक विद्यालयों के 100 विद्यार्थियों जिसमें शासकीय विद्यालय के 50 विद्यार्थियों में (25 छात्र 25 छात्राओं) तथा अशासकीय विद्यालय के 50 विद्यार्थियों में (25 छात्र 25 छात्राओं) का चयन यादृच्छिक रूप से किया गया प्रस्तुत अध्ययन के उपकरण हेतु सुषमा तलेसरा एवं अख्तर बानों (2005) द्वारा निर्मित मानसिक स्वास्थ्य मापनी का प्रयोग किया गया है। चयनित विद्यार्थियों पर उपरोक्त उपकरण का प्रयोग करके उनके प्राप्तांक ज्ञात किये गये तथा अध्ययन के परिणाम दर्शाते है। कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया तथा अशासकिय माध्यमिक विद्यालय के अध्ययन विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य में सार्थक अन्तर पाया गया है।

मूलशब्द: मानसिक स्वास्थ्य, माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी।

प्रस्तावना

बालक के जन्म के बाद सम्पूर्ण जीवन में शारीरिक एवं मानसिक रूप से स्वास्थ्य होना अत्यन्त आवश्यक है। बालक शारीरिक एवं मानसिक रूप से स्वस्थ्य हुये बिना अपने जीवन के लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर सकता है। बालक के सर्वांगिण विकास के लये मसतिष्क का स्वस्थ्य होना अत्यन्त आवश्यक है। बालक के सर्वांगिण विकास में शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका है। बालक के शिक्षा ग्रहण करने में। मानसिक स्वास्थ्य की भूमिका महत्वपूर्ण रहती है यदि कोई बालक मानसिक रूप से स्वस्थ्य है तो शिक्षा को अच्छे ढंग से ग्रहण कर सकेगा तथा किसी कार्य को करने में संक्षम होगा लेकिन यदि कोई बालक मानसिक रूप से स्वस्थ्य नहीं है। तो वह शिक्षा को अच्छे ढंग से ग्रहण नहीं कर पायेगा साथ ही उनकी शैक्षिक प्रगति में विभिन्न प्रकारकी बाधायें आयेंगी मानसिक स्वास्थ्य का बालक की शैक्षिक अकाक्षा अध्ययन आदत लक्ष्यों आदि पर प्रभाव पड़ता है। बालक के समांयोजन में मानसिक स्वास्थ्य की महत्वपूर्ण भूमिका रहती है। यदि बालक का व्यवहार सभी विषयों परिस्थितियों में एक समान नहीं रहता है। तो वह मानसिक रूप से अस्वस्थ्य होगा मानसिक स्वास्थ्य का परिवार व समाज पर प्रभाव पड़ता है जैसा की मानसिक स्वास्थ्य अच्छा है तो वह व्यक्ति परिवार व समाज में प्रिय रहेगा। मानसिक स्वास्थ्य संवेगात्मक स्थिरता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यदि किसी व्यक्ति का मासिक स्वास्थ्य अच्छा है तो उस व्यक्ति में संवेगात्मक चिन्ह नैतिकता स्थिरता अधिक होगी। जिससे की वह व्यक्ति उचित अनुचित का ज्ञान कर पाता है।
कुछ विद्यार्थियों को कक्षा में सभी पसन्द करते है। क्यों कि उसका मानसिक स्वास्थ्य अच्छा है। जिससे बालक के अध्ययन आदते रूचियों बुद्धि, चरित्र आदि अच्छा होगा विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य को जानना अत्यन्त आवश्यक है। मानसिक स्वास्थ्य को जानकर विद्यार्थियों में व्यक्तिगत विभिन्नतायें पायी जाती तथा सभी बालक एवं बालिकाओं का मानसिक स्वास्थ्य भी अलग–अलग होता है।

अतः शिक्षक के लिये मानसिक स्वास्थ्य को जानना नितान्त आवश्यक है। जिससे शैक्षिक प्रगति कर सके मानसिक स्वास्थ्य को महत्वताः के कारण माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के मानसिक स्वस्थ्य का अध्ययन किया गया है।

अध्ययन के उद्देश्य

1. मध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन करना।
2. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन करना।
3. मध्यमिक स्तर पर अध्ययरत अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन करना।

परिकल्पना

1. मध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. मध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शासकीय विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3. मध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत अशासकी विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

शोध अध्ययन विधि

प्रस्तुत शोध में वर्णनात्मक अनुसंधान की सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

प्रतिदर्श

अध्ययन में परिकल्पनाओं के सत्यापन के लिये उत्तर प्रदेश के मऊ जनपद के माध्यमिक विद्यालय के 100 विद्यार्थियों के यादृच्छिक रूप से चयन किया गया जिसमें 50 (छात्र एवं छात्राएँ) शासकीय माध्यमिक विद्यालय से तथा 50 (छात्र एवं छात्राऐं) अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों से लिया गया।

सारणी 1: शासकीय माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों एवं छात्राओं से प्राप्त आंकड़े

समूह	पदत्तों की संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विद्यालय	टी मूल
छात्र	25	137.1	183.3	1.44
छात्राएँ	25	131.9	181.1	0

df= 48.0.05 (1.67) 1.44 > सार्थक अन्तर है।

उपरोक्त सारणी का अवलोकन करने पर ज्ञात होता है कि शासकीय माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की संख्या 25 का मध्यमान 137.1 तथा प्रमाणित विचलन 183.3 तथा शासकीय माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की संख्या 25 का मध्यमान 131.9 प्रमाणिक विचयन 181.1 है। स्वतंत्रता की कोटी df= 48 है दोनों आंकड़ों की तुलना करने के लिय टी मान की गणना की गई। टी का मान 1.44 प्राप्त हुआ है। मानक की सार्थकता ज्ञात करने के लिये टी सारणी का अवलोकन किया। टी का मान (1.67) स्तर पर मान 0.05 से कम है। अतः शासकीय माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्य में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है।

सारणी 2: अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों एवं छात्राओं से प्राप्त आंकड

समूह	पदत्तों की संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विद्यालय	टी मूल
छात्र	25	140.1	19.2	2.32
छात्राएँ	25	130.9	22.2	0

df= 48.0.005 (1-67) 1.67 > सार्थक अन्तर है।

उपरोक्त सारणी का अवलोकन करने पर ज्ञात होता है कि अशासकीय माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की संख्या 25 है तथा मध्यमान 140.1 तथा प्रमाणित विचलन 19.2 तथा अशासकीय माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की संख्या 25 का मध्यमान 130.4 प्रमाणिक विचयन 22.2 है। स्वतंत्रता की कोटी कत्रि 48 है दोनों आंकड़ों की तुलना करने के लिय टी मान की गणना की गई। टी का मान 2.32 प्राप्त हुआ है। मानक की सार्थकता ज्ञात करने के लिये टी सारणी का अवलोकन किया। टी का मान (1.67) स्तर पर मान 0.05 से अधिक है। अतः माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्य में सार्थक अन्तर पाया गया है।

निष्कर्ष

उपरोक्त परिकल्पनाओं के विश्लेषण एवं उनसे प्राप्त निष्कर्ष के आधार पर यह स्पष्ट है कि माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य में सार्थक अन्तर पाया गया है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि छात्रों का मानसिक स्वास्थ्य छात्राओं के अपेक्षा उच्च है। जिससे छात्रों के मानसिक तनाव एवं सामाजिक दायित्व छात्राओं की अपेक्षा कमी पायी गई छात्राओं के परिवारिक व सामाजिक दायित्व अधिक पायी जाती है। अतः शासकीय माध्यमिक विद्यालय के छात्रों एवं छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है तथा अशासकीय माध्यमिक विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य में सार्थक अन्तर पाया गया है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. भटनागर ए0वी0 एवं भटनागर मीनाक्षी शिक्षण अधिगम का मनोविज्ञान।, 2004.
2. मिश्रा रविन्द्र नाथ, वर्मा पूर्णेन्द्र शहरी एवं ग्रामीण छात्र–छात्राओं का मानसिक स्वास्थ्य का तुलनात्मक अध्ययन।, 2014.
3. चौधरी वर्षा एवं पंचोली दीपक उच्चतर माध्यमिक स्तर पर महिला पुरुष के मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन।, 2018.
4. नागमणी के0 तथा साहू मंजू उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य एवं उपलब्धि अभिप्रेरणा के मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन।, 2013.
5. कुमार विवेक सिंह हरिशंकर उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य का तुलनात्मक अध्ययन।, 2020.
6. सिंह पुष्पेन्द्र उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के अभिभावक सम्बन्ध एवं विद्यालय वातावरण उनके मानसिक स्वास्थ्य एवं संवेगात्मक बुद्धि पर प्रभाव का अध्ययन।, 2021.

Creative Commons (CC) License
This article is an open access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY 4.0) license. This license permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are credited.